सं० थ्रो॰ वि०/यमुना/99/86/27294 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० डैन्सन इंजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट, सरदाना नगर), अम्बाला रोड़, जगाधरी के श्रीमक श्री सतनाम सिंह, पुन्न श्री ईसर सिंह मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा इन्टक श्राफिस, ब्राह्मण धर्मशाला, रेलवें रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुई हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसचना सं० 3(44)84—3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्मंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

वया श्री सतनाम सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं ग्रो॰वि॰/ममुना/103/86/27300.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ डैन्सन इजिनियरज (यमना गैसिज यूनिट, सरदाना नगर), प्रमेवाला रोड़, जगाधरी के श्रीमक श्री विनोद कुमार, पुत्रंश्री हंसराज, मार्फत डा॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक ग्राफिस, ग्राह्मण धर्मशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ट्रसूचना सं०-3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिष्ट्रसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विनोद कुमार, की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं श्रो वि./यमुना/ 108-86/ 27306.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. डैन्सन इजिनियरज (यमुना गैसिज यूनिट सरदाना नगर), अम्बाला रोड, जगाधरी के श्रीमक श्री ख़ुव देव यादव, पुत श्री मगरु यादवं मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इंटक श्राफिस, बाह्मण धर्मशाला रेलवे रोड, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिविनयम, 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्चना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 के द्वारा उक्त श्रिवस्चना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवस्वकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयक्षा सम्बन्धित मामला है :--

नया श्री ध्रुव देव यादव की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो०वि०/ययुना/102-86/27312.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० डॅन्सन इजिनियरज (यमुना गैंसिज यूनिट, सरदाना नगर), श्रम्बाला, रोड़ जगाधरी के श्रमिक श्री मूल चन्द, पुत्र श्री सोमा राम मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इन्टक ग्राफिस, बाह्मण धर्मशाला, रेलवे रोड, जगाधरी, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की घारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रथोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय श्रम्बाला की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :—

न्या श्री मूल चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?